१.

## अनित्यता.......

क्रिकेट के मैंदान में,
एक अकेला बल्लेबाज
खड़ा है लिए एक बल्ला
चारों ओर हो रहा है जबरदस्त हो-हल्ला।
दौड़ता आ रहा है गेंदबाज,
कभी तेज तो कभी फिरकी,
कभी बाउंसर तो कभी गुगली
गेंदें फेंक रहा है,
पोंछते हुए पसीना
चारों ओर १० खिलाड़ी और खड़े हैं
उस एक अकेले बल्लेबाज को,
कैच आउट, रन आउट
स्टंप या क्लीन बोल्ड
करने/कराने
ऐसे में यदि वह हो जाये
शून्य पर ही आउट
तो क्या है आश्चर्य?
पर वह एक अकेला,
अकेले बल्ले से
चौके/छक्के लगाते हुए
बना लेता है दुहरा/तिहरा शतक
महद् आश्चर्य, सुखद आश्चर्य।

ऐसे ही जीवन के मैदान में
खड़ा है निहत्था जीव,
चारों ओर आउट करने के लिए
गोली हैं, बम हैं,और है एक्सीडेंट
हार्ट फेल, ब्रेन हेमरेज, कैंसर,
एड्स, शुगर, मलेरिया और पीलिया
ऐसे वातावरण में
यदि जल्दी ही आउट हो जाये कोई
तो इसमें क्या है आश्चर्य ?
आश्चर्य तो होता है यह देखकर
कि फिर भी लोग
बेफिक्र रहते हुए
अर्ध शतक, अरु शतक
लगाये चले जा रहे हैं,
और महद् आश्चर्य है कि
ऐसे महँगे जीवन में सिर्फ
पाप ही कमाये जा रहे हैं।

जागो चेतन जागो,
जानो चेतन को जानो,
खुद को पहचानो
पापों से बचो!
नहीं तो,
पता नहीं कौन? कब ? कहाँ ? और कैसे?
हो जायेगा आउट।

१२/११/१४ १०.०८

******



२.

## विश्वास.....

पिता के हाथों से,
उछाला जाता है नन्हा-सा शिशु
पर वह डरता नहीं, रोता नहीं,
खिलखिलाता है, खुशियाँ मनाता है
क्यों?
क्योंकि
पिता सम्हालेंगे
उसे विश्वास है।

सरकस में
मुस्कराते हुए एक लड़की
छोड़ देती है एक झूले को
क्यों?
क्योंकि
उसका साथी, दूसरा झूला जरूर देगा
उसे विश्वास है।

हम प्रतिदिन पूजन, स्वाध्याय करनेवाले
नहीं छोड़ पाते
व्यापार व परिवार में
कर्तृत्व के अहंकार को
परद्रव्यों में ममकार को
कषायों की मार को
क्यों?
क्योंकि

हमें हमारे धर्म पिता सर्वज्ञ भगवान व
जिनवाणी माता द्वारा बताये गये
पुण्य-पाप के फल,
वस्तु की स्वतंत्रता व
क्रमबद्ध पर्याय के सिद्धान्तों पर
नहीं है विश्वास
इसीलिये हम
'मैंने किया' के अहंभाव में जागते हैं,
'मुझे यह करना, वह करना' की चिंता में सोते हैं
'कहीं ऐसा हो गया तो? वैसा हो गया तो?'
की आशंका में जीते हैं
और
निरन्तर ही भाव मरण करते हैं।।
२४/११/१४

******

## सन्मित्र

**पापों से जो हमें बचावे, सुख-दुख में जो साथ रहे।**
**हो हितकारी, लगे न प्यारी, तो भी ऐसी बात कहे।।**
**हो विश्वास अटूट जहाँ पर, इक दूजे का कष्ट सहे।**
**है सद्भागी वह प्राणी जो, ऐसे सन्मित्रों के मध्य रहे।।**

१५/११/१४



## ३.
## दृष्टि.....

धन के अर्थी की दृष्टि में
केवल धन है,
मान-सम्मान व परेशानी नहीं।

खेल के अर्थी बालकों की दृष्टि में
केवल खेल है
भोजन-पानी व सोना-बिछौना नहीं।

पद के अर्थी राजनेता की दृष्टि में
केवल पद है,
नीति-सिद्धान्त या दल नहीं।

माता के अर्थी नन्हें शिशु की दृष्टि में
केवल माता है
अन्य कोई प्रलोभन नहीं।

विद्या के अर्थी विद्यार्थी की दृष्टि में
केवल विद्या ही है
अखबार और टी वी नहीं।
इसीलिए इनको,
इनका चाहा मिल जाता है।

परन्तु
आत्मा/मोक्ष/धर्म के
अर्थी कहलाने वालों की दृष्टि में
मान-सम्मान, भोजन-पान,
अखबार व टीवी
व्यापार व परिवार सब है
पर
आत्मा/मोक्ष/धर्म नहीं

बस इसीलिए
आत्मा/मोक्ष/धर्म के गीत गाते,
उसकी ही चर्चा सुनते-सुनाते
और सब कुछ तो मिल जाता है
पर
आत्मा/मोक्ष/धर्म नहीं मिलता।

२५/११/१४

******



## ४.
## चिंतन करो, चिंता नहीं.....

चेतन चिंतन करो चिंता नहीं
चिंतन चैतन्य से मिलायेगा
रत्नत्रय के पुष्प खिलायेगा
चिंता तो चिता में जलायेगी
भव-भव में तुझे भ्रमायेगी।
जीव अनादि से चैतन्य से है विरक्त
भव-भोगों, पद-लिप्सा में है अनुरक्त।
भूलकर चैतन्य का चिंतन
कर रहा निरन्तर चिंता
खो गई शांति व सुख
अनवरत चिंता ही चिंता।
काले से सफेद होते बाल की चिंता
अंगूर से किसमिस होते
गाल की चिंता
लावण्यमयी से, मुरझाती खाल की चिंता
चाहे -अनचाहे
घटते-बढ़ते माल की चिंता।
इस चिंता की चिता में
चेतन ने स्वयं को जलाया है
सब कुछ खोया ही खोया है
सोचो जरा!
तूने आज तक क्या पाया है?
इसलिये कहता हूँ;
हे चेतनराज!
चिंतन करो चिंता नहीं
चेतन का चिंतन ही चेतन से मिलायेगा।।

५.

## हम चाहते हैं....

(एक शिक्षक की भावना)

हम चाहते हैं
ऐसे युवा वर्ग का निर्माण
जिनका जीवन हो
तत्त्वज्ञान से सुरभित,
शरीर हो
जिनवाणी के प्रचार-प्रसार में समर्पित
मन में हो
देव-शास्त्र-गुरु के प्रति भक्ति
आचरण में हो
संयम, सदाचार और जैनाचार यथाशक्ति
हृदय में हों
महापुरुषों की स्मृतियाँ
जो हों विवेकी, स्वाभिमानी
पर
विनयशील अरु निरभिमानी।
हे प्रभुवर! हे गुरुवर!
सामर्थ्य दो,
स्याद्वादमयी वाणी से
वात्सल्य एवं प्रभावना की भावना लेकर
मार्ग में बढ़ सकूँ
अपने से अच्छा इन छात्रों को गढ़ सकूँ
जिनका लक्ष्य हो
केवल निर्वाण
हम चाहते हैं
ऐसे युवा वर्ग का निर्माण।



६.

## मैं नहीं चाहता....

(एक पिता/शिक्षक की पुत्र/शिष्य के प्रति भावना)

मैं नहीं चाहता कि
मेरी सन्तान ऐसा/इतना पढ़े कि
वह जिनवाणी माँ एवं
अपनी माँ की भाषा भूल जाये।

मैं नहीं चाहता कि-
वह इतना आगे बढ़े कि
धर्म पिता देव-शास्त्र-गुरु व
मुझसे बात करना ही भूल जाये।

मैं नहीं चाहता कि-
वह इतनी ऊँची मंजिल चढ़े कि
उसे अपने में उतरने का समय ही न रह जाये।

मैं नहीं चाहता कि-
उसे देश जाने, विदेश जाने
वह भी सबको जाने/पहचाने पर
तीर्थंकरों/आचार्यों/अपने पुराण पुरुषों को ही भूल जाये।

पर क्या चाहा हुआ होता है?
होगा तो वही, जो क्रमबद्ध में होगा

यह जानते/मानते हुए भी
मैं ऐसा चाहता हूँ कि
वह सबको जाने या ना जाने
सब उसे जाने या ना जाने
पर वह इस जीवन में
अपने को अवश्य जाने-पहचाने और माने
और
सुखी हो जाये।

******

## शुरुआत कर

**पूर्णता के लक्ष्य से ही, तू अरे! शुरुआत कर।**
**सिद्ध-सम है रूप तेरा, सिद्धों से अब बात कर।।**
**अब बातों में ही न उलझना, बात में आनंद ना-**
**निज आत्मा आनंदमय, अब निज से ही मुलाकात कर।।**

******



७.

## सफाई अभियान

आओ चलें,
हम भी चलायें, सफाई अभियान
अनादि से भरी
मोह-राग-द्वेष रूपी गंदगी को हटाने का।

अभी तक हमने
कुछ समय स्वाध्याय को देकर
गंदगी हटाने को बजट तो आवंटित किया,
पर
वह राग-द्वेष बढ़ाने में ही
खर्च हो गया।

पूजा-पाठ करके
सफाई करने के फोटो तो खिंचाये
पर
गंदगी वहीं की वहीं रह गई।

यह गंदगी दूसरे के द्वारा फैलाई हुई है
आरोप लगा कर,
गंदगी को ही छिपाया

राग-द्वेष को हटाने के नारे तो लगाये
पर

सच्चे दिल से, अपने दिल (अन्तर) से
उन्हें हटाना नहीं चाहा।
इस तरह हम
गंदगी में ही रहने के आदी हो गये
उसकी सड़ांध में
क्षमा-मार्दव आदि दश धर्म रूप सुगंधी से
समता-शान्ति-स्थिरता रूप स्वास्थ्य से
बहुत दूर हो गये
और
फलस्वरूप
आकुलता, चिन्ता, अशान्ति से
ग्रस्त हो गये

आओ अब
अपने स्वच्छ स्वभाव को जानकर
अनादि की गंदगी हटाने,
रत्नत्रय और दशधर्म की सुगंध फैलाने,
आज सच्चे मन से
सफाई अभियान चलायें।।

१३/१२/१४

******



## ८. आत्मार्थी की अन्तर्भावना...

अब मैं बहुत थक गया हूँ।
इसीलिए चलते-चलते रुक गया हूँ।
थक गया हूँ
स्वार्थी दुनिया में जीते-जीते,
अनंत दु:खों के कडुवे आँसू पीते-पीते
इस दुनिया में हँसाने वालों ने ही रुलाया है,
इस स्वार्थी दुनिया ने जिताने के नाम पर हराया है।
सबने जगाने के नाम पर मोह नींद में सुलाया है,
मैं समझ नहीं पाया अब तक
कौन अपना व कौन पराया है?
भाई-बहन, पति-पत्नी आदि के रिश्ते निभाते,
घर-दुकान, मन्दिर, तीरथ, आते-जाते,
खाते-कमाते, खिलाते-पिलाते
थक गया हूँ।।
एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक तन धारते,
रूठों को मनाते, परायों को अपना बनाते,
पाप करके धन कमाते,
धन लगाकर पुण्य कमाते थक गया हूँ
अनाम आत्मा के नाम रख, बदनाम करते,
धर्म के नाम पर अधर्म करते,
अपने से दूर रहते, कष्ट सहते थक गया हूँ,
इसीलिए राग-द्वेष, पुण्य-पाप की अंधी दौड़ से
रुक गया हूँ
अपने में रम गया हूँ।
५/१/१५

## ९.
## न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति

एक दिन
हमारे पैर थे कमजोर
चलने-फिरने को मजबूर
तब दिया था किसी ने सहारा
हाथ का
उस सहारे को पाकर
आज हम
चल रहे हैं/दौड़ रहे हैं।

आभारी हैं हम,
उनके अविस्मरणीय सहयोग के लिए,
हम सदैव कामना करते हैं
हमारे सहयोगियों को
हमारे सहयोग की आवश्यकता ना पड़े।

पर दोस्तो!
हम अपने ऊपर किये गये
उपकार के बदले
भले ही अपने पैर किसी को ना दें,
परन्तु
हाथ का सहारा देकर
सहयोगी अवश्य बनें
दूसरों के चलने में।



ताकि
आज जो कमजोर हैं/मजबूर हैं
वे भी
चल सकें/दौड़ सकें हमारी ही तरह।

हमें विश्वास है
आप जरूर हस्तावलम्बन देंगे,
क्योंकि
न हि कृतमुपकारं साधवो विस्मरन्ति।।

९/१/१५

******

## सवैया

**जानना है जीव को, जानता ना जीव को,**
**जाने बिना जीव तेरा कैसे उद्धार हो।**
**जाने नहीं जीव जो, कौन कहे उसे जीव?**
**जीव जाने बिना नहीं, तेरा बेड़ा पार हो।**
**जड़ में जो अटका है, भव में वो भटका है,**
**जानो जीव, मानो जीव, तब ही सुधार हो।**
**मैं भी जीव, तू भी जीव, सिद्ध भगवन्त जीव,**
**जिनने बताया जीव, उन्हें वंदना हमारी हो।।**

३१/१०/१४

******

## १०.
## जो कुछ कहा-सच कहा

मित्रो!
मैंने 'बढ़ते भगवान-घटते भक्त'
से लेकर 'मध्यान्तर' तक
जो कुछ लिखा/कहा;
सबने पढ़ा
पढ़कर सबने मुझसे कहा
'भाई साहब! आपने जो कुछ कहा
सच कहा/पूरा सच कहा।
पर
क्यों कहा?
यह लिखकर इनको
व वह लिखकर उनको
दोषित किया है आपने
अब इसकी सजा पाने को आप रहें तैयार
हम कह रहे हैं, बहुत ही सोच-विचार।'

मित्रो!
आप घबरायें नहीं
मैंने भी बहुत सोच-विचारकर ही कहा है
मजा या सजा जो भी मिले
पाने को मैं हूँ तैयार।
परन्तु बन्धु मेरे!



बढ़ते..... से लेकर मध्यान्तर तक
जो संदेश है वह
व्यक्तिपरक नहीं
सार्वजनिक व सार्वभामिक है
और कदाचित् सार्वकालिक भी।

मित्रो!
मैंने जो कहा, यदि सच कहा
लगते/दिखते हैं वे दोष आपमें
तो जिस तरह
पापी से नहीं पाप से घृणा करने का है संदेश
उसी तरह इन दोषों को
दूर करने/कराने का
करना उपाय
कुछ न कर सको तो
न करना उनकी अनुमोदना
तभी होगा हमारा सार्थक प्रयास
इसीलिए तो मैंने
जो कुछ कहा, सच कहा।।

१३/३/१५

******

## ११.
## अवसर आया है चुनाव का....

अवसर आया है चुनाव का,
कई सालों बाद मौका मिला है चुनाव का
अभी तक हर बार
मैं गलत चुनाव करता रहा हूँ
इसीलिये दुखी और परेशान होता रहा
हर बार
दो उम्मीदवार रहे मेरे सामने
एक
निर्विकार, निरपेक्ष, निर्दोष
परन्तु अनंत वैभव सम्पन्न, आनंद का भंडार
अरस, अरूप, अगंध, अशब्द और अस्पर्श
और दूसरा
सरस, सरूप, व सुगंध से भरपूर
जिसने
विषयों की मदिरा पिला
क्षणिक विषयों के प्रलोभन दिये,
लावण्यमयी काया और माया में भरमाया
मैं अज्ञ
विषयासक्त हो
चुनाव करने के मौके पर
लोभित, तृषित हो
गलत का सही मान चुनाव करता रहा



फलस्वरूप अनंत दुखों को सहता रहा।
आज भाग्य जागा है
फिर से चुनाव का अवसर आया है
अब लेता हूँ शपथ
नहीं उलझूँगा
विषयों के लोभ में
कंचन कामिनी के मोह में
जिसे अब तक समझा था
अरस और अरूप
आज समझ में आया है कि
सच में तो वही है सरस और सरूप
अब मैं,
हाँ ! अब मैं
सुखकारक-दुःखहारक
उस चैतन्य परमात्मा को ही
चुनूँगा/वरूँगा
और
अनंतकाल सिद्धालय में
अनंत सुखमय मुक्तिरमा में रमूँगा।

९/१/१५

******

## १२.
## जिनेन्द्र का संविधान

जिस तरह
भारतीय संविधान को
बिन जाने बिन माने।
राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री
सांसद और विधायक तो क्या?
एक सद्नागरिक भी नहीं बन सकते

पर हम,
भारतीय संविधान में लिखित
अपने कर्तव्यों व मौलिक अधिकारों को जानकर
देश में अपनापन व विकास में योगदान कर
उसे अपनाकर
सद्नागरिक ही नहीं
सब कुछ बन सकते हैं।

उसी तरह
जिनेन्द्र कथित,
वस्तु स्वरूप प्रतिपादक
अणु-अणु की स्वतंत्रता के उद्घोषक
प्रत्येक आत्मा में सिद्धत्व शक्ति के निरूपक
जिनेन्द्र का संविधान अर्थात्
जिनवाणी के रहस्यों को



बिन जाने, बिन माने
सिद्ध, अरहन्त, आचार्य, उपाध्याय, साधु तो क्या?
एक श्रावक भी नहीं बन सकते;
अत:
आओ! हम सब
स्वाध्याय का संकल्प लेकर
जिनवचनों के अनुसार
धर्म व
धर्म के आधार स्तम्भ भगवान आत्मा का
सही स्वरूप समझकर
श्रावक ही नहीं
सिद्ध बनने का शुभारंभ करें।

२६/१/१५

******

### मुक्तक

**पुण्य क्रिया को हेय समझकर, उसे सर्वथा जो तजते हैं।**
**हो स्वच्छंद वे पाप करें, अरु चतुर्गति में भ्रमते हैं।।**
**पुण्यभाव अरु पुण्य क्रिया यदि हो न भूमिका योग्य।**
**फिर भी खुद को धरमी समझें, जिनमत के यह सदा अयोग्य।।**

******

## १३.
## विनाशकाले विपरीतबुद्धिः

अनादि से निगोद में रह
अनंत दुख पाये
वहाँ से निकल कर
चार गति के चक्कर लगाये
पुण्योदय से सैनी और जैनी भी हो गये
परन्तु
पापों में उलझने के संस्कार नहीं गये।

वीतरागी धर्म पाकर भी
राग-रंग में ही उलझता है
अहिंसा परमो धर्मः का नारा लगाकर
हिंसा ही फैलाता है।
अपरिग्रही प्रभु की जय बोल
परिग्रह जोड़ने हेतु मरता है
परिजन-पुरजन को निज मान
जीवन को खोता है
वस्तु है अनेकान्तमयी
परन्तु
एकान्त को ही पकड़ता है
धर्म/सुख है स्वाधीनता में
पर
इन्द्रियों/विषयों का लोलुपी हो



पराधीन होता है
पंच पाप करता है, कषायों में रमता है
भावों को बिगाड़
काल को दोष देता है
मोहांतक धर्म पाकर भी
मोह में ही सोता है
अनंत शक्ति सम्पन्न होकर भी
दीन-हीन अल्पज्ञ होता है
आया था अवसर सुनहरा
मुक्तिमार्ग पाने का
परन्तु यह
निष्कंटक मार्ग में विषकंटक बोता है
आतमहित में प्रमादी हो
देह के शृंगार में ही रचता और पचता है
ऐसा लगता है
जहाँ से निकल कर आया था
वहीं जाने को ही बेताब दिखता है,
सही ही कहा है ज्ञानियों ने
**'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः'**

२८/१/१५

******

## १४.
## असफलता बनाम सफलता

मेरे प्रिय मित्रो!
जरा ध्यान से सुनो।

मैं आज सहर्ष स्वीकार करता हूँ
मैं जीवन में असफल हूँ।
मुझे यह स्वीकार करते हुए कोई संकोच नहीं कि
मैं पूरी तरह असफल हूँ।
मैंने चाहा था
मैं व्याख्याता बनूँ
नहीं बन सका।
मैंने प्रयास किया सुन्दर घर बनाऊँ
नहीं बना सका।
बेटे को जो पढ़ाना चाहा
नहीं पढ़ा सका
बेटी को जो बनाना चाहा;
नहीं बना सका।

चाहा था मैंने
मैं दुबला व सुन्दर बनूँ
नहीं बन सका।
जहाँ मैं रहना चाहता हूँ
वहाँ रह नहीं पाता
जहाँ से जाना चाहता हूँ



वहाँ से जा नहीं पाता।
छात्रों को जो सिखाने के लिए पसीना बहाता हूँ
छात्र वह नहीं कुछ और ही सीखते हैं।
जो पाना/कमाना चाहता हूँ
वह आज तक पा/कमा नहीं सका।

समाज व परिवार को अपने अनुसार चलाना चाहता हूँ
पर सब मुझे ही,
अपने अनुसार चलाना चाहते हैं।
किसी और की क्या कहूँ
मेरे गाल और बाल भी मेरी इच्छा के विरुद्ध
रूप परिवर्तन कर बगावत कर रहे हैं।

मेरी असफलता के और कितने प्रमाण दूँ???
मैंने किया मैंने किया... के अहंकार में जीते-जीते
मध्यांतर हो गया
लोगों को बुद्धू बनाते-बनाते
खुद बुद्धू बन गया।
मैं घोषित करता रहा कि
जो भी, जहाँ भी हो रहा है
वह सब मैं ही कर/करा रहा हूँ
मैं एक सफल वक्ता, व्यवस्थापक, लेखक, संयोजक
पति, पिता और सब कुछ हूँ।

पर अब और अधिक भ्रम में जी नहीं सकता
अकर्तृत्व/ज्ञातृत्व के अमृत को छोड़,
कर्तृत्व के जहर को पी नहीं सकता।
इसलिए मित्रो!

आज मैं स्वीकार करता हूँ कि
मैं पूरी तरह असफल (अकर्ता)
पिता, शिक्षक, व्यवस्थापक
संयोजक और निर्देशक हूँ।
साथ ही इन जिनवचनों को विनम्रता से स्वीकार करता हूँ-
''होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का कर्ता क्या काम।''
एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता नहीं,
मैं होते हुए कार्य का ज्ञाता हूँ
कर्ता नहीं।
स्व-पर का मात्र ज्ञाता हूँ, कर्ता नहीं।
मैंने आज तक कर्तृत्व का मात्र अहंकार किया
सच तो यह है
मैं पर का करता नहीं
कर सकता नहीं।

यह मेरी कमजोरी नहीं, शक्ति है।
वस्तु का यथार्थ स्वरूप है
इसकी स्वीकृति में ही अनंत पुरुषार्थ है।
यह स्वीकृति ही मेरी
प्रथम/अन्तिम/अनन्त सफलता है
क्योंकि
इस स्वीकृति में ही तो
सच्चे सुख/मोक्ष के सरस फल लगेंगे।

२८/१/१५

******



## १५.
## अध्यापक

अध्यापक बनना
व्यवसाय नहीं है
पद, प्रतिष्ठा पाने का साधन नहीं है।
पद, पैसा और प्रतिष्ठा तो अध्यापक की पदरज है
अध्यापक होना तो
दीपक के समान जलना है,
स्वयं को जला
दूसरे का मार्ग प्रकाशित करना है
जिससे कि
कंटकाकीर्ण मार्ग में
कोई आहत न हो सके
स्वार्थ व पाप की दुनिया में भटककर
सुखद लक्ष्य से भ्रष्ट न हो सके।

पर
हतभाग्य है वह दीप
जो स्वयं जलकर भी
अन्य का मार्ग प्रकाशित करने को उद्यत है
परन्तु
स्वार्थी आँधियाँ उसे बुझाने/नष्ट करने पर उतारू हैं।

हे तमहर दीप!!
तेरी किस्मत में यहाँ प्रकाश करना नहीं है

चल और कहीं चल
जल कहीं और जल
पर मित्र! ध्यान रहे
जगह बदलना
काम नहीं
इस विश्व में असंख्य पथ और पथिक हैं
लालायित
तेरा प्रकाश पाने को
जो हतभाग्य है
वह सौभाग्य में बदल जाने को।।

७/३/१५

******

## मंगल प्रभात

**द्रव्य निद्रा को टालो प्यारे! देव-गुरु को वंदन कर।**
**शास्त्रों का अभ्यास करो नित, जो अनादि के संकट हर।।**
**हो ज्ञान भानु का उदय जहाँ, अरु मोह नींद जब भग जावे।**
**अन्तर्मन होवे अति प्रसन्न, मंगल प्रभात तब कहलावे।।**

१६/११/१४

******



१६.

## अहिंसा परमो धर्मः

हे प्रभो!
मैंने किसी से सुना है
मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे
विश्व शांति के लिए
बनाए जाते हैं
इन सुन्दर भवनों में आप निवास करते हैं।

हे प्रभो!
हर मंदिर-मस्जिद-गुरुद्वारे में
विश्व शांति के नाम पर
हो रहे हैं घंटनाद
जल रहीं हैं अगरबत्तियाँ
पूजन, अर्चन, कीर्तन को
लगे हैं बड़े-बड़े ध्वनि-विस्तारक यंत्र।

पर प्रभो!
विश्व में इतनी अशांति व आतंक क्यों है ?
भ्रष्टाचार, दुराचार, हिंसा और भय क्यों है ?
हे प्रभो!
एक बार मैंने सुना था
जब-जब धर्म की हानि होगी,
अधर्म, हिंसा, भ्रष्टाचार का प्रसार होगा

तब आप आयेंगे
धर्म की स्थापना व
अधर्म/हिंसा/भ्रष्टाचार का नाश करने

पर हे प्रभो!
आप कब आओगे?
आज
देवमूर्ति व देवस्थान तोड़े जा रहे हैं
धर्म के नेता, धर्म को व देश के नेता देश को
बदनाम कर रहे हैं
माँ बहिनों की इज्जत लुट रही है
प्रभो आप कब आओगे?

पिता का सहारा छूट रहा है
भाई की बाँह टूट रही है
धर्म स्थानों में
तलवार/बंदूक व बम चल रहे हैं
मानव ही मानव का शत्रु बनकर छल रहे हैं

प्रभो!
आज तो दरिंदगी की हद हो गई
जब ज्ञानार्जन करते
सैकड़ों नौनिहालों पर आतंकी गोली चल गई।
माँ रो रही है, पिता रो रहा है
छोटे-बड़े भाई-बहन रो रहे हैं



सारी वसुधा की मानवता रो रही है
प्रभो!
आप कब आओगे?
हे प्रभो आप चुप क्यों हैं?
बोलो न!
आप कब आओगे?

***

हे प्रभो!
कहीं ऐसा तो नहीं कि
मैंने ऐसा भी सुना है कि
हिंसा, अनाचार, दुराचार
भ्रष्टाचार या हो बलात्कार
सबका कारण है
अज्ञानता
धर्मान्धता
अमानवीयता
स्वार्थपरता व अहंकार
और
शांति/समृद्धि/सुख का कारण है
सम्यग्ज्ञान/सदाचार/मानवता
उदारता/ सरलता व समरसता
तब
हे प्रभो!
कहीं आपका मूक संदेश यही तो नहीं है

कि
हमारी
अशांति/आतंक/हिंसा व दुर्गति का कारण
हमारा ही अज्ञान है
स्वार्थपरता/संकीर्णता व अहंकार है।
और
आपका यही संदेश है न कि
यदि हम चाहते हों सुख/शांति व समृद्धि
तो हम ही उठें और फैलायें
ज्ञान का प्रकाश
समता, सरलता, संतोष
आपस में भाईचारा
निज को प्रभु-सम
और सबको निजसम देखने की अलख जगायें
तभी होगा
हिंसारूपी अधर्म का नाश
और
**अहिंसा परमो धर्मः** का प्रकाश।

१६/१२ के प्रसंग पर, १७/१२/१४

******



## १७.
## जीवन्त तीर्थ
## जिनवाणी ही शरण है...

हे गुरुवर!
मैं चाहता हूँ
इस स्वार्थभरी दुनिया में,
कोई तो मेरा हो
जो कष्टों में साथ दे
भावी विपत्तियों से बचाये
मैं जिसे सब कुछ देना चाहूँ
पर जो मुझसे कुछ भी न चाहे
मेरे अवगुण ही न देखे
मेरे गुणों की प्रशंसा कर
मेरी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करे
मेरे आंसू पोंछे
हाथ का सहारा दे
मुझे गिरने से बचाये।

'हे वत्स!'
इस स्वार्थी संसार से
दु:खों के पारावार से
कषायों की आग से
शुभाशुभ राग से
दु:खमयी जन्म-मरण से

पंच परावर्तन के भ्रमण से
बचाकर
सुख-शांति, विश्राम देने वाली
आँसुओं को पोंछकर
हाथ का सहारा देकर
अनंत सुख में धरने वाली
मुक्ति तक ले जाने वाली,
शांति सुधा रस से भरपूर,
विषय-कषायों से दूर
तेरे ही गीत गाने वाली,
अवगुणों को दूर कर
सर्व गुण सम्पन्न करने वाली
तीर्थंकरों के विरह को भुलानेवाली
माँ जिनवाणी है ना,
हे पुत्र!
परमार्थ से निज आत्मा
और व्यवहार से
इस कलिकाल में
जीवन्त तीर्थ
जिनवाणी ही शरण है।

८/४/१५

******



## १८.
## दीक्षान्त सन्देश

''ऐ ध्रुवधाम के ध्रुवार्थियो!
आज
ध्रुवधाम की सुरक्षित चार दीवारी से
निजगृह को जाने
जीवन में कुछ कर दिखाने
उन्मुक्त गगन में विचरण करने
के अवसर पर
तुम्हारे प्रमुदित मन
पुलकित वदन
की (के बारे में सोचकर) स्मृति मात्र से
मेरा मन भी प्रमुदित होकर
शुभाशीष देते हुए कह रहा है
यशस्वी भव! चिरंजीवी भव! विजयी भव!
शुभमस्तु! कल्याणमस्तु! आरोग्यमस्तु।
जो भी लक्ष्य बनाओ
सहर्ष व सहज ही पाओ।

पर
पुत्रो, सावधान!
तुम जिस दुनिया में जा रहे हो
वहाँ
तुम हो अभी बहुत भोले-भाले
जबकि दुनिया में लोग है ऊपर से भोले, भीतर से भाले।

तन के उजले मन के काले,
सच बोलने को मुँह पर लगा लेते हैं ताले।
हर कोई
चाम से कम,
काम से अधिक करता है प्यार
पर काम निकल जाते ही
करने लगता है तकरार
धैर्य से ऐसे लोगों की पहचान करना
किसी पर भी जल्दी
ना ही विश्वास, न अविश्वास करना।
अपना काम समय पर करना,
अपना काम स्वयं ही करना,
उपलक्ष्यों में लक्ष्य को नहीं भूलना।

यह भी ध्यान रखना
यह जीवन मात्र पद, पैसा, प्रतिष्ठा व परिवार के लिए नहीं
अपितु जो अभी तक नहीं पाया
उस तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के लिए है।

पुत्रो!
आदर करना
देव-शास्त्र-गुरु, माता-पिता व गुरुजनों का
लक्ष्य रखना आतम हित का
स्वाध्याय करना जिनवाणी का
प्रयास करना



बुराई व बुरों की संगति से बचने का
जो सत्य समझा है उसे जीवन में उतारने का।
समता, सरलता, स्वाध्याय, सादगी, समन्वय, समर्पण
हो तुम्हारा पाथेय
जीवन हो तुम्हारा
सुखद, शुभद, मंगलमयी
यही है हार्दिक शुभकामना।।

परन्तु ध्यान रखना पुत्रो!
मात्र शुभकामनाओं से कुछ नहीं होता
कार्य सम्पन्न होने हेतु
अन्य कारणों सहित
सम्यक् पुरुषार्थ है जरूरी
जीवन में न आये कोई मजबूरी।
हे ध्रुवार्थियो!
प्रसन्न हो जाओ क्योंकि-
अनहोना कभी होता नहीं
होनी कभी टलती नहीं
होता वही जो क्रमबद्ध व कर्मबद्ध होता है।
प्रिय छात्रो!
यही है मेरा परोक्ष दीक्षान्त सन्देश।।

९/४/१५ ७.४५

******

## १९.
## स्वारथ का है संसार

मित्रो!
आओ, एक कविता सुनाता हूँ
स्वानुभूत व्यथा
आपको बताता हूँ
इस स्वार्थी संसार ने
मुझे बार-बार छला है
रुलाया है, सताया है
मतलब के हैं यहाँ सब यार
इसीलिये मैं कहता हूँ
स्वारथ का है संसार।
स्वार्थसिद्धि हो तो
सब करते हैं प्यार
काम निकल जाने
पर वे ही देते हैं दुत्कार
लाभ होय तो गधे को कहते बाप
बिन स्वार्थ के नहीं पूछते अपने सगे माँ बाप को
सब है अपने-अपने सुख को रोते
मूरख बनकर हम व्यर्थ ही बोझा ढोते
पत्नी, पुत्र, भाई-बहिन और सारे यार
माल झपटने और कुचलने बैठे
सारे रिश्तेदार
जब तक पुष्प मकरंद भरा है



तब तक मधुकर मँडराते हैं
मधु होवे निःशेष
सारे मधुकर उड़ जाते हैं
इसीलिये मैं कहता हूँ-
निज सुख पाने जो दुःख देते,
वे कैसे हों मेरे यार?
इनसे करो कभी मत प्यार
स्वारथ का है संसार।

मेरी यथार्थ/वैराग्य परक
कविता सुनकर
सोया हुआ मित्र जागकर बोला-
'मित्र! तुम तो दिखते बड़े उदार
स्वार्थी हैं मात-पिता-पुत्र-पत्नी-सब यार
और
हमारा पूरा संसार
पर एक बात तो बताओ मेरे यार
तुम हो कौन?
कौन-सा है तुम्हारा संसार?
जहाँ बसते हों सभी उदार
हमारा तो है स्वारथ का संसार।

मित्र की बात सुनकर
क्षणभर को हो गया निर्विचार
फिर करने लगा विचार

सब ही जब अपने सुख को रोते
तब मैं भी तो अपने ही सुख को रोता हूँ?
सब मेरा ही ध्यान रखें
मेरी सेवा करें
मुझे मेवे खिलायें
खुद भूखे रह जायें
और
सब रहें मेरी आज्ञा में खड़े
पर मुझे कुछ भी न करना पड़े
यही तो मैं चाहता हूँ
तब तो मैं भी घनघोर स्वार्थी ही हूँ।

मुझे मौन देख
मित्र ने कहा-
हे उदार प्रियवर!
किस सोच में पड़ गये?
अरे!
हम जिसे मानते हैं
सुख/स्व/स्वार्थ/अपना
वह तो है मात्र सपना
निराकुलता है सच्चा सुख
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-सुख आदि
अनंत गुण हैं मेरा स्व।
अनंत गुणात्मक निजात्मा व सच्चे सुखरूप
स्व की प्राप्ति ही हमारा स्वार्थ हो



इस स्वार्थसिद्धि में
नहीं चाहिए
पुत्र-मित्र-परिवार
तन-धन का व्यापार
ना ही किसी का प्यार
ना है इसमें कोई हकदार
ना जिम्मेदार
फिर काहे का स्वार्थ का संसार?

मित्र!
सच्चे स्वार्थ को समझो
न करो राग अरु द्वेष
झूठा है सारा क्लेश
न करो किसी पर रोष अरु प्यार
न ही पर में अहंकार-ममकार
और फिर
रोकर नहीं
गाकर/प्रसन्नता से कहो
हाँ-हाँ स्वारथ का है संसार।।

१४/४/१५

******

## २०.
## क्षमा
## ( व्यंग्य )

मैं हूँ जिनधर्म पालक
उत्तम क्षमाधर्म धारक,
मेरे जैसा कोई नहीं।

आज तक ना जाने कितनी बार
लोगों ने मुझे मंचों पर बुलाया
१ घण्टे का कहकर ४ घण्टे तक बैठाया
मेरे अवगुणों को भी गुण कहकर बताया
पूछ लो हर किसी से
क्या मुझे रंचमात्र गुस्सा आया?

परिजन व पुरजन सब मेरी बात मानते हैं,
नौकर, पानी माँगो तो दूध लाते हैं
मंदिर में भी जिनेन्द्र का नहीं मेरा ही शासन चलता
कह तो दे कोई,
क्या - कभी मुझे गुस्सा आता?

याद आ रहा है मुझे
बस दो-चार बार ऐसा हुआ
जब
मेरे बैठने की मंच जरा छोटी थी,
श्रोता कुछ कम थे
चाय में शक्कर कम और दाल में नमक ज्यादा था



बेटे ने मुझसे पूछे बिना पेंट सिला डाला था
नौकर माँ की तबियत खराब जान
बिना पूछे भाग गया था।
ऐसे प्रसंगों में थोड़ा-सा गुस्सा आ गया-
मंच व्यवस्थापक को पद से हटा दिया
श्रोताओं को रिश्तेदारों सहित आने का उपदेश दिया
बहूरानी को माता-पिता की याद दिला दी थी
बेटे को संपत्ति से बेदखल करने को चेताया
भागे हुए नौकर को हमेशा के लिए भगाया
अब आप कहना चाहें तो भले कहें
कि मुझे गुस्सा आया।
वरना तो मै हूँ
उत्तम क्षमाधर्म धारक
जैनधर्म पालक।

२४/३/१५

******

## विज्ञ कहें या दीवाना

**जिस धन दौलत के पीछे, पागल हुआ जमाना है।**
**आकुलता में निशदिन रहता, नहीं सुहाता खाना है।।**
**धर्म छोड़कर भागा फिरता, फिर भी साथ न वह आवे-**
**ऐसे धन हित, नर तन खोता, विज्ञ कहें या दीवाना है।।**

******

## २१.
## पारमार्थिक बनाम पारिवारिक
### ( व्यंग्य )

मैंने पढ़ा है कि
एक किसी स्वार्थी व्यक्ति ने
ताबीज बाँधकर
जयपुर के राजा को
कर दिया था मोहित
तब राजा भूल गया था
सत्य-असत्य, हित-अहित
उसके बहकावे में आकर
निर्दोष जिनधर्म को सदोष व
निरपराधी को अपराधी मान
आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी को
अपमानित कर,
करा दी थी उनकी हत्या।

पर आज यह देखकर
होता है महद्/दुखद आश्चर्य
कि बेटे और भाई के रूप में
रिश्ते/नातेदार के रूप में
बैठे हैं अनेकों स्वार्थी व्यक्ति
जिन्होंने कलयुगी राजाओं को
प्रेम/अधिकार व चापलूसी की ताबीजों से
किया हुआ है मोहित,



जिससे भूल रहे हैं वे
नैतिकता/सत्यासत्य/हिताहित
जिससे कर रहे हैं वे
समर्पित विद्वानों/कार्यकर्ताओं की
भावहिंसा और अपमान
पारमार्थिक संस्थाओं में
अपने पारिवारिक अधिकारों को बचाये रखने को।
१३/३/१५

******

## सत्संगति.....

**सत् स्वभाव के संग में रहना, निश्चय से सत्संग कहा।**
**जो जन सत् का आश्रय लेते, उनका संग व्यवहार अहा।।**
**सत् स्वभाव की चर्चा करने, वालों के संग में रहना।**
**है उपचरित सत्संग भाइयो! यथायोग्य संगति करना।।**
**सत् संगति से ही यश वैभव, अरु सुख शान्ति मिलती है।**
**सत्संगति करती है उपकृत, सब दोषों को हरती है।।**

२६/११/२०१४

******

## २२.
## किस बात का है रोना?

**सोचता हूँ**
यह क्यों हुआ?
ऐसा क्यों हुआ?
अभी क्यों हुआ?
यह नहीं होना चाहिए था।

**लगता है –**

यह तो बुरा हुआ,
मेरे साथ अन्याय हुआ
सबने मेरे ही अधिकारों को छीना
मुझको ही दिखाया गया नीचा
जबकि
सब थे झूठे, मैं ही था सच्चा
पर लोगों ने समझा मुझे ही अकल का कच्चा।

**चाहता हूँ –**

यह हो जाये
जरा जल्दी हो जाये
सब कुछ मुझे ही मिल जाये
सारी दुनिया मेरे बस में हो जाये

परन्तु
जब जिनवचन सुने



सर्वज्ञ का स्वरूप जाना
क्रमबद्ध व कर्मबद्ध का स्वरूप समझा
तब समझ में आया
जिसका, जब, जो, जैसे, जहाँ, होना था
उसका, तब, वो, वैसे ही, वहीं हुआ है
ना कुछ और हो सकता था ना ही हुआ है।

इसलिए
अब मैं प्रसन्न हूँ, निश्चिन्त हूँ
निर्मद, निर्भय व निर्भार हूँ
क्योंकि
जब होता नहीं कभी कोई अनहोना
तब फिर किस बात का है रोना?

१०/१/१५

******

## २३.
## परिणमन की स्वतंत्रता

मानता और जानता हूँ
हूँ अकर्ता और मात्र ज्ञाता
मेरे चाहने से कुछ नहीं होता
पर न जाने क्यों
चाहता हूँ
दो दिलों को जोड़ने में
मैं बनूँ परिपक्व सेतु,
है जहाँ अज्ञानतम छाया हुआ
मैं वहाँ पर दीप बनकर करूँ
सम्यग्ज्ञान का प्रकाश
जहाँ फैली है कषायों की दुर्गंध
वहाँ फैलाऊँ समता-सरलता की सुगंध।
निर्दोष जिनधर्मरूपी निर्मल जल
पंथ/सम्प्रदायों के
क्षुद्र घटों में है कैद
उन घटों को फोड़कर
निर्मलजल को
विस्तृत क्षीरसागर में मिला दूँ।
पर क्या चाहने से कभी कुछ हुआ है?
नहीं होता चाहने से यह जानकर भी
क्या चाहना मेरा रुका है?
अरे हाँ! यही तो है
प्रत्येक द्रव्य-गुण-पर्याय के
परिणमन की स्वतंत्रता।
२३/२/१५



## २४.
## नववर्ष

आ रहा है नव वर्ष
छा रहा है नव हर्ष।
न हो जीवन में कोई संघर्ष।
चतुर्दिक् हो नूतन उत्कर्ष।
जीवन से असदाचार मिटे।
हर घट में सदाचार प्रगटे।
मिथ्यात्व का हो नाश,
सम्यग्ज्ञान का हो प्रकाश।
जिनवाणी का हो अभ्यास,
सन्मार्ग पर चलने का हो प्रयास।
न हों जाति पंथ सम्प्रदाय के संघर्ष
कुछ ऐसा ही हो हम सबका नव वर्ष।

३१/१२/१४

******

## २५.
## मोह-शत्रु को नहीं छोड़ूँगा

मैं
उसे अब नहीं छोड़ूँगा
जिसने मुझे अपमानित किया
उसका सम्मान अब नहीं करूँगा
जिसने मुझे रुलाया
सारी दुनिया में घुमाया
जिसके कारण
अपने आप को व अपने परिवार को भी
भूलकर
दौड़ता रहा/भागता रहा
न दिन देखा न रात
न मान न सम्मान
बस अंधा हो
उसके इशारे पर
नाचता रहा,
दुख को ही सुख मानता रहा,
उसके परिवार को अपना
व अपनों को पर मानता रहा।
जिसने मुझे बैल की तरह जोतकर
अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया।

पर अब बहुत हो गया
अब मैं पूरी ताकत के साथ



उसकी कलई खोलूँगा
अब मैं उसके विरुद्ध बोलूँगा
उसको तिरस्कृत कर
जड़ से ही नष्ट करूँगा
मैं नहीं छोड़ूँगा
हाँ! अब मेरा संकल्प है
नहीं छोड़ूँगा
उस आजन्म शत्रु मोह को।

१३/३/१५

******

## सवैया

**जिनालय जावे नाहीं, जिनवच सुनें नाहीं,**
**निशि भोजन करें जमीकंद खावें हैं।**
**पंच पाप नित सेवें परमेष्ठी नहीं जोवें,**
**रात-दिन विकथा में चित्त को रमावें हैं।**
**सप्त तत्त्व जाने नाहीं, व्यसनों को त्यागे नाहीं,**
**उलझे कषायों माहीं, राग-रंग भावे है।**
**जैनकुल मिला महाभाग्य से है भाई मेरे,**
**व्यर्थ में गमावे, कैसे जैन तू कहावे है?**

७/१/१५

******

## २६.
## वृक्ष ....

जब
लगाता है कोई वृक्ष
सबको
शीतल छाया और
मधुर फल देने के लिए।
रात-दिन उसकी देखभाल करता है
पानी और खाद देता है
बहुत ही आनंदित होता है तब

जब
वह वृक्ष फलता और फूलता है
पथिक शीतल छाया में विश्राम व
मधुर फलों का स्वाद पाते हैं।

परन्तु
जब कोई अचानक ही
उसे ही बेदखल कर देता है
उस वृक्ष की छाया व फलों की मधुरता से
उसे उस वृक्ष का नाशक बताकर
वृक्ष के पास में आने-जाने पर
लगा देता है पाबंदी



तब उसका हृदय
अंतर में शूलता है
और
इस स्वार्थी/कृतघ्नी दुनिया को
भूलना चाहकर भी
नहीं भूलता है।।

२१/२/१५

******

## मुक्तक

**इस दुनिया से मोह न करना, यहाँ सब आते-जाते हैं।**
**स्वारथ की सिद्धि हेतु सभी, इक दूजे को रिझाते हैं।।**
**काम निकल जाने पर वे ही, अनजाने बन व्यवहार करें-**
**न पहचाने, न बात करें, अरु वे ही तो ठुकराते हैं।।**

***

**अपने किये न होय कुछ, तदपि विकल्प बहु होय।**
**शुभ विकल्प से पुण्य हो, पाप अशुभ से होय।।**

**शुभ विकल्प बहु होय न पर का कर्ता मानो।**
**मैं तो ज्ञायकभाव सदा निज को पहचानो।।**
**ज्ञायक निज को मानो, कर्म का बन्ध न होगा।**
**हो विकल्प पर ज्ञाता जानो द्वन्द्व न होगा।।**

******

## २७.
## उद्यमेन हि सिध्यन्ति

**चाहता हूँ**
कर्मों से मुक्ति हो,
दु:खों से छुटकारा हो,
जन्म-मरण का अभाव हो
रत्नत्रय मिले
दशलक्षण के पुष्प खिलें
अनन्त सुख मिले।।

परन्तु
**सोचता हूँ**
मोक्ष/दु:खों/कर्मों का नाश या
रत्नत्रय/दशलक्षण/अनंत सुख
जब होना/मिलना होगा
तभी तो होगा/मिलेगा
क्योंकि सर्वज्ञ के ज्ञान विरुद्ध
तो कुछ होना नहीं
इसलिये फालतू में अब मुझे रोना नहीं
मस्त रहो मस्ती में
भविष्य की चिन्ता में
वर्तमान का सोना कभी खोना नहीं।

गुरुदेव बोले -



अरे भूले हुए भगवान!
सत्य समझो और स्वीकार करो
प्रमाद में स्वच्छंद हो
न समय बर्बाद करो
मेरे प्रिय बंधु!
कार्य पाँचों समवाय मिलने पर ही होता है
तभी प्रकट हुआ कहलायेगा स्वभाव
तभी जागेगी काललब्धि
तभी होगी भली होनहार
निमित्त भी तभी स्वयं आयेंगे तेरे द्वार
जब तुम स्वयं
स्वभाव सन्मुखता का करोगे सम्यक् पुरुषार्थ
क्रमबद्ध पर्याय का समझोगे सही अर्थ
मात्र चाहने से नहीं होगी मुक्ति
समझना होगी सही युक्ति
पुरुषार्थ से ही होगी मुक्ति

सत्य ही तो कहा है-
**'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।।**

१३/१/१५

******

## २८.
## इधर-उधर....

जाना है किधर, जाता है किधर,
बस देख रहा है इधर-उधर।।१।।

सोचे कुछ अरु कहता कुछ है,
करता कुछ है, बस इधर-उधर।।२।।

संतान से निज सेवा चाहे,
पर मात-पिता से, इधर-उधर।।३।।

तन-धन-पद-यश, सब ही चाहे,
पर पुण्यभावों से, इधर-उधर।।४।।

मनचाहे मुझे अधिकार मिलें,
पर कर्तव्यों से इधर-उधर।।५।।

सिद्धों सम सुक्ख अनंत चहे,
पर निज आतम से इधर-उधर।।६।।

निज चैतन्य सदन को भूला,
भटक रहा है, इधर-उधर।।७।।

२१/११/१४

******

समर्पण चेरिटेबल ट्रस्ट का नौवाँ पुष्प...

# जो कुछ कहा-सच कहा
## (काव्य संग्रह)

रचयिता
**राजकुमार शास्त्री**

प्रकाशक
**समर्पण चेरीटेबल ट्रस्ट**
18 आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर, जिला-उदयपुर (राज.)
मो. + 91 94141 03492 Email - samarpan1008@gmail.com

प्रस्तुत कृति
**श्री कल्याणमल राजमल पाटनी**
**सिद्ध चेतना ट्रस्ट, कोलकाता**
के अर्थ सहयोग से प्रकाशित

संस्करण : प्रथम 1000 प्रतियाँ,
दिनांक : दशलक्षण पर्व : 18 सितम्बर, 2015
भाद्रपद शुक्ला पंचमी, वीर निर्वाण संवत् 2541
सहयोग राशि : 20 रुपये (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्राप्ति स्थान : **समर्पण चेरीटेबल ट्रस्ट**
18 आदिनाथ कॉलोनी
केशव नगर, उदयपुर (राज.)
+ 91 94141 03492

## अनुक्रमणिका


| क्र. | कविता | पृष्ठ | क्र. | कविता | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|---|
| ०१. | अनित्यता....... | १ | १५. | अध्यापक | २७ |
| ०२. | विश्वास..... | ३ | १६. | अहिंसा परमो धर्म: | २९ |
| ०३. | दृष्टि..... | ५ | १७. | जीवन्त तीर्थ... | ३३ |
| ०४. | चिंतन करो, चिंता नहीं..... | ७ | १८. | दीक्षान्त सन्देश | ३५ |
| ०५. | हम चाहते हैं.... | ८ | १९. | स्वारथ का है संसार | ३८ |
| ०६. | मैं नहीं चाहता.... | ९ | २०. | क्षमा | ४२ |
| ०७. | सफाई अभियान | ११ | २१. | पारमार्थिक बनाम पारिवारिक | ४४ |
| ०८. | आत्मार्थी की अन्तर्भावना... | १३ | २२. | किस बात का है रोना? | ४६ |
| ०९. | न हि कृतमुपकारं... | १४ | २३. | परिणमन की स्वतंत्रता | ४८ |
| १०. | जो कुछ कहा-सच कहा | १६ | २४. | नववर्ष | ४९ |
| ११. | अवसर आया है .... | १८ | २५. | मोह-शत्रु को नहीं छोड़ूँगा | ५० |
| १२. | जिनेन्द्र का संविधान | २० | २६. | वृक्ष .... | ५२ |
| १३. | विनाशकाले विपरीतबुद्धि: | २२ | २७. | उद्यमेन हि सिध्यन्ति | ५४ |
| १४. | असफलता बनाम सफलता | २४ | २८. | इधर उधर | ५६ |


**मुद्रण व्यवस्था** : प्री एलविल सन, जयपुर + 91 95092 32733

# प्रकाशकीय

'समर्पण' अब चेरीटेबल ट्रस्ट के रूप में पंजीकृत संस्था है। हमने अभी तक साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में १. श्री कानजीस्वामी के प्रवचन साहित्य का अनुशीलन, २. बढ़ते भगवान-घटते भक्त (३ संस्करण), ३. विलक्षण दशलक्षण (२ संस्करण), ४. बढ़े सो पावे, ५. कर्म विचारे कौन?, ६. मध्यान्तर (उपन्यास), ७. कहान यशोगाथा (काव्य संग्रह) का प्रकाशन किया है। सभी पुस्तकें विषय वस्तु की अपेक्षा नवीनता लिये हुए थीं, जिन्हें पाठकों ने हाथों हाथ लिया। अधिकांश प्रकाशन ४ माह की अल्पावधि में ही समाप्त हो गये।

दशलक्षण पर्व के अवसर पर राजकुमार शास्त्री द्वारा रचित 'जो कुछ कहा-सच कहा' व 'प्रेरणा' काव्य संग्रह, श्रीमती रश्मि जैन, फरीदाबाद एवं श्री ज्ञाता सिंघई, सिवनी द्वारा लिखित आध्यात्मिक/प्रेरक विचारों के संग्रह प्रकाशित किये जा रहे हैं।

श्रीमती रश्मि जैन व श्री ज्ञाता सिंघई से हमारा व्यक्तिगत परिचय नहीं है, परन्तु फेसबुक/वाट्सएप पर आपके द्वारा भेजे गये संदेश बहुत ही आध्यात्मिक/प्रेरक व नई शैली में लिखित प्रतीत हुए, जो अध्यात्म से भरपूर है और नये पाठकों को तत्त्वज्ञान/सदाचार समझाने में उपयोगी सिद्ध होंगे - ऐसा समझकर ट्रस्ट ने उनसे प्रकाशन की अनुमति माँगी और उन्होंने तत्त्वप्रचार की भावना से अपना नाम भी लेखक के रूप में प्रकाशित न करने की भावना व्यक्त करते हुए सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। एतदर्थ हम उनके आभारी हैं।

हमारा उद्देश्य ही नये लेखकों की नई विधा व विषय वस्तु को लेकर लिखी गई रचनाओं को आप सभी के सहयोग से आप सबके लिए प्रकाशित करना है।

तीन पुस्तकों के प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोग के लिए वाट्सएप पर सूचना मात्र देने पर **श्री कल्याणमल राजमल पाटनी सिद्ध चेतना ट्रस्ट, कोलकाता** की ओर से श्री अशोक पाटनी, सिंगापुर ने तीन पुस्तकों के प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोग की सहज स्वीकृति प्रदान की, तदर्थ हम उनके भी आभारी हैं।

'प्रेरणा' श्री राम-नंदनी ग्रन्थमाला के अंतर्गत प्रकाशित की जा रही है। इसके प्रकाशन हेतु अर्थ सहयोगियों के नाम उस पुस्तक में प्रकाशित किये जा रहे हैं। हम उन्हें भी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

पुस्तकों का प्रकाशन प्री एलविन सन, जयपुर के संजय शास्त्री ने रुचि पूर्वक समय पर सुन्दर प्रकाशन करके दिया है, एतदर्थ हम उनके प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

आपको हमारे प्रकाशन उपयोगी लगें तो अन्य तक पहुँचायें व त्रुटियों से हमें अवगत करायें।

निवेदक

**– समर्पण चेरीटेबल ट्रस्ट, उदयपुर**

## सम्पर्क सूत्र

| **राजकुमार शास्त्री** | **अजित शास्त्री** | **ऋषभ शास्त्री** | **पीयूष शास्त्री** |
|---|---|---|---|
| उदयपुर | अलवर | छिंदवाड़ा | जयपुर |
| ९४१४१३४०९२ | ९४१४४३२४५९ | ९४२५८४५६२० | ९७८५६४३२०२ |

# समर्पण चेरीटेबल ट्रस्ट

**स्थापना** – २० सितम्बर २०१४, मुख्यालय – १८ आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर युनिवर्सिटी रोड उदयपुर।

**संरक्षक** – श्री अजित जैन बड़ौदा, श्री कन्हैयालाल दलावत, श्री ताराचन्द जैन उदयपुर, श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा सूरत, श्री ललितकुमार किकावत लूणदा, श्रीमती स्वाति जैन उदयपुर।

**ट्रस्ट मण्डल – अध्यक्ष**– राजकुमार शास्त्री उदयपुर, **उपाध्यक्ष**– अजितकुमार शास्त्री अलवर, **कोषाध्यक्ष**– रमेशचन्द वालावत, उदयपुर, **मंत्री**– डॉ. ममता जैन उदयपुर, **सहमंत्री**– पीयूषकुमार शास्त्री जयपुर, **ट्रस्टी**– अशोककुमार लुहाड़िया मंगलायतन, ऋषभकुमार शास्त्री छिंदवाड़ा, डॉ. महेश जैन भोपाल, रतनचन्द शास्त्री कोटा

**उद्देश्य** – १. तत्त्वज्ञान, अहिंसा, शाकाहार, सदाचार का प्रचार-प्रसार करना। २. सामाजिक विकृतियों के विरुद्ध जागरुकता पैदा करना। ३. अनुपलब्ध आवश्यक व नये लेखकों का श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशन करना। ४. सर्वोपयोगी पत्रिका का प्रकाशन करना। ५. शिक्षा व चिकित्सा के क्षेत्र में जन सहयोग प्राप्त कर वांछित व्यक्तियों तक पहुँचाना।

**कार्य पद्धति** – १. सबसे सहयोग – सबको सहयोग की भावना से कार्य करना। २. फण्ड एकत्र करके ब्याज से काम करने की सोच नहीं, अपितु जनकल्याणकारी योजनाओं को सबके समक्ष रखना व सबसे सहयोग मिलने पर उस योजना को संचालित करना, सहयोग न मिले तो योजना को बिना संकोच छोड़ देना। ३. अच्छी बातें-सच्ची बातें अपनी सामर्थ्यानुसार लोगों तक पहुँचाना। ४. व्यक्ति या संस्था की मुख्यता नहीं रखना। ५. ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित साहित्य व पत्रिका को ईमेल से उपलब्ध कराना, जिससे कागज की बचत एवं लोगों को अविनय का भय कम हो।

**अभी तक सम्पन्न कार्य** – साहित्य प्रकाशन– १. श्री कानजीस्वामी के प्रवचन साहित्य का अनुशीलन (शोध प्रबन्ध – डॉ. ममता जैन; गुरुदेवश्री पर प्रकाशित एकमात्र शोध प्रबन्ध) २. बढ़ते भगवान-घटते भक्त (तीन

संस्करण) ३. बढ़े सो पावे ४. विलक्षण-दशलक्षण (दो संस्करण) ५. कर्म विचारे कौन? (एकांकी संग्रह)६. मध्यान्तर (उपन्यास) ७. कहान यशोगाथा (श्री कानजी स्वामी से संबंधित ११० कविताओं का संकलन)

**पत्रिका प्रकाशन**- 'संस्कार-सुधा' मासिक पत्रिका का प्रकाशन।

**शिक्षा-चिकित्सा सहायता योजना** - स्नातकों द्वारा स्नातकों के लिये शिक्षा-चिकित्सा सहायता योजना यह ट्रस्ट द्वारा संचालित एक अभिनव प्रयोग है। इस योजना में लगभग ३०० स्नातक जुड़ गये हैं। इस योजना में स्नातकों (शास्त्री) से प्रतिवर्ष सहयोग प्राप्त कर स्नातकों को ही शिक्षा व चिकित्सा हेतु सहयोग करना।

**आगामी कार्य योजना** - साहित्य प्रकाशन - १. श्रीमती रश्मि जैन, दिल्ली २. श्री ज्ञाता सिंघई, सिवनी, ३. पं. श्रेणिककुमार जैन, जबलपुर के प्रेरक विचारों/प्रसंगों का क्रमशः प्रकाशन। राजकुमार शास्त्री के 'जो कुछ कहा-सच कहा' व 'प्रेरणा' काव्य संग्रह का प्रकाशन।

२. शिक्षा चिकित्सा सहायता योजना - सर्व साधारण से जन सहयोग प्राप्त कर सर्व साधारण के लिये प्राप्त सहयोग में से वितरित करना। यह योजना कुछ समय बाद प्रारंभ करने की योजना है।

**आभार** - हमें यह बताते हुये प्रसन्नता हो रही है कि साहित्य प्रकाशन हेतु हमें सूचना मात्र पर सहयोगी उपलब्ध हुए हैं। जिस प्रकाशन के पूर्ण सहयोग-कर्ता प्राप्त हुए हैं, उन प्रकाशनों में हमने अन्य से किसी प्रकार का सहयोग नहीं लिया है (कई सहयोगियों को तो मना भी करना पड़ा है)और अधिकांश पुस्तकें इच्छुक पाठकों तक नि:शुल्क पहुँचाई गई हैं। कुछ पुस्तकों की राशि प्राप्त हुई जो अन्य को डाक से भेजने में ही व्यय हो गई है। इस तरह ट्रस्ट के पास मात्र २५ हजार रुपये लगभग शेष हैं फण्ड के रूप में अन्य कोई राशि नहीं है और उदार सहयोगियों व ट्रस्ट की भावनानुरूप फण्ड की आवश्यकता भी नहीं है। हम सभी उदार सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

**निवेदन** - १.आप हमारी योजनाओं/भावनाओं से सहमत हैं तो कृपया स्वेच्छा से सहयोग प्रदान करें। २. किसी भी योजना के संदर्भ में आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

# मन की बात....

जब भी कोई व्यक्ति भाव विभोर हो जाता है तब वह किसी गीत / कविता की पंक्तियों को गुनगुनाने लगता है। हिन्दी साहित्य में विविध कवियों के द्वारा विविध रसों में काव्य रचना हुई है। जैन कवियों ने भी भक्ति/ अध्यात्म/वैराग्य आदि विषयों को लेकर काव्य रचना की है, जो साहित्य की अनमोल धरोहर है।

सहज संयोग से कुछ वर्षों में मेरे जीवन में आये विशिष्ट कर्मोदय के परिवर्तन के कारण गत सितम्बर माह से नाना प्रकार के भाव उमड़-घुमड़ कर मस्तिष्क में आने लगे और २० सितम्बर को सर्वप्रथम एक कविता लिखने में आई '**दुर्लभ नरभव पाकर चेतन, किया न तूने तत्त्व विचार**' जिसे मेरे विद्यालयीन अध्यापक साथियों ने सराहा व इस क्षेत्र में और लिखने की प्रेरणा दी। प्रशंसा पाकर मेरी कलम चलने लगी और लगभग प्रतिदिन ही विविध विषयों पर जिनमें तत्त्वज्ञान के अलावा सामाजिक सोच की संकीर्णता, स्वार्थपरता आदि के प्रति मन में छुपा हुआ आक्रोश कविताओं व विशेषरूप से दुखते दोहों के रूप में प्रकट होने लगा।

भाई अजित शास्त्री ने अधिकांश रचनाओं को देखा, पढ़ा, सराहा ही नहीं अपितु महत्त्वपूर्ण सुझाव देकर परिमार्जन भी कराया, जिसके कारण ही वह रचनायें इतने अच्छे रूप में वाट्सएप व फेसबुक के माध्यम से आप तक पहुँचती रहीं व आपकी सराहना भी मिलती रही।

हो सकता है, कुछ पंक्तियाँ किसी को अच्छी न लगें, सच्चाई तो यह है कि गद्य-पद्य में लिखते हुए मुझे जो कुछ भी समाज में गलत लगा, उसे कहने की हिम्मत की और ऐसा करते समय मुझे लगता था कि कुछ लोग नाराज हो सकते हैं और हुए भी; साथ भी यह भी पता था कि समाज में आसानी से कुछ भी परिवर्तन संभव नहीं है।

जो भी हो, परन्तु यह सब लिखते हुए मुझे हिन्दी साहित्यकार रघुवीर सहाय की इन पंक्तियों ने प्रेरणा दी -

**'कुछ होगा**
**कुछ होगा, अगर मैं बोलूँगा**
**न टूटे, न टूटे तिलस्म सत्ता का**
**मेरे अंदर एक कायर टूटेगा।'**

इनको पढ़कर लगा कि कुछ परिवर्तन हो या ना हो पर मुझे जो सही और गलत लगता है, उसे विनम्रता के साथ सबके समक्ष रखने की हिम्मत जुटानी चाहिए।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि मेरी इन भावनाओं को अधिकतर पाठकों ने, अपनी भावना समझा, नाराज कुछ लोग हुए तो प्रशंसा अनेकों से मिली। मुझे यह कहने में भी संकोच नहीं है कि मैंने जो कुछ भी गद्य या पद्य में लिखा है, उस विषय-वस्तु को लेकर स्वाध्यायी समाज में लिखा या कहा नहीं जाता है, परन्तु सोचते बहुत हैं या कहने पर पसन्द करते हैं। मेरी यह सभी रचनायें उन प्रबुद्ध पाठकों के लिये ही हैं, उनकी ही हैं।

ये रचनाएँ अध्यात्म मिश्रित साहित्यिक रचनायें हैं। अगर प्रबुद्ध पाठक इसी परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन करेंगे तो अधिक न्यायसंगत होगा।

आपको रचनायें अच्छी लगें/कोई कमी लगे तो अवश्य ही हमें बताने का कष्ट करें। रचनायें दो भागों में प्रकाशित कर रहे हैं। एक छन्दमुक्त कवितायें 'जो कुछ कहा-सच कहा' नाम से दूसरा छन्दबद्ध कवितायें 'प्रेरणा' नाम से।

यह मुझे पता है कि साहित्य की कसौटी पर संभवत: रचनायें कमतर होंगीं पर विषयवस्तु की दृष्टि से विविधता लगेगी - ऐसा मुझे विश्वास है। पुस्तक आवश्यक लगे तो अपने पास सहेज कर रखें, अन्यथा अन्य मित्रों तक पहुँचा कर प्रचार में सहयोगी बने।

आप काव्य का आनंद लीजिए। सोचिए और आत्महित तथा समाज-हित में जो कुछ कर सकते हों, अवश्य कीजिए।

**- राजकुमार शास्त्री**